ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 180-181**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

भारतीय कला और संस्कृति का विकासः परंपरा और आधुनिकता की द्वंद्वात्मकता

हितेश कुमार

शोध अध्येता– चित्रकला विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) भारत

Received-15.03.2025, Revised-22.03.2025 Accepted-28.03.2025 E-mail : Hiteshchanyal@gmail.com

सारांशः कोई भी प्रकिया अनवरत प्रयासों व प्रयोगों के फलस्वरूप एक परम्परा का रूप ग्रहण करती है। भारतीय कला में परंपरा व आधुनिकता का एक नाजुक संतुलन देखने को मिलता है। भारतीय चित्रकला प्राचीन काल में धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होती थी। परन्तु आधुनिक काल में यह लौकिक जीवन को दर्शाने लगी है। आधुनिक समय में भारतीय कला, संस्कृति व परिवेश में पश्चिमी शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है। यदपि विषय भारतीय संस्कृति से प्रेरित होते हैं। परंपरा देश व समाज को समृद्व बनाने का कार्य करती हैं। वहीं आधुनिकता उसे नवीनता प्रदान करती हैं। भारतीय समकालीन कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों के प्रवृति पर समय के अनुरूप नवीन विचारों को स्थान दिया। अधिकांश कलाकारों का ध्येय रहा है कि परंपरागत सांस्कृतिक विषयों को लेकर आधुनिकता को अपनाया जाय और इसका प्रभाव उनकी कृतियों पर स्पस्ट रूप से दिखाई देता है।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय कला, संस्कृति का विकास, लौकिक जीवन, धार्मिक भावना, आधुनिकता, नवीनता, कलाकृति

वर्तमान समय में संस्कृति और कला में परंपरागत वस्तुओं का महत्व बडा है। जिसका प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव कला पर भी पडा है। वास्तविक रूप में यदि देखा जाए तो कलाओं के द्वारा ही परंपराओं का संरक्षण होता है। कला व परंपराओं द्वारा विभिन्न संस्कृति व क्षेत्र विशेष को जाना जा सकता है। प्रत्येक क्षेत्र, राज्य व देश की अपनी अनूठी विशेषता होती है। जो कि संस्कृति, कला व परंपराओं द्वारा अभिव्यक्त की जाती है। वस्तुतः परंपरागत कला का सम्बन्ध प्राचीन काल व पूर्वजों से है। जो कि प्राचीन विषयवस्तु व शिल्प के साथ जुडी है। समय परिवर्तन के फलस्वरूप परंपरागत चीजों में भी आधुनिकता का समावेस देखने को मिलने लगा है और कलाकार अपने कृतियों में ऐसे तत्वों का समावेश करने लगे हैं जो समृध व अद्वितीय कला कला परंपराओं से प्रेरित हैं। इसलिए निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि परंपरागत कला व आधुनिक कला एक दूसरे के पूरक हैं। व दोनों के समन्यवय से एक रोचक क्षेत्र कलाकार के समक्ष उभर के आता है जो कलाकारों को आधुनिक व परंपराग के मध्य संतुलन बनाये रखने में विशेष योगदान देता है। परिवर्तन की प्रक्रिया ही आधुनिकता को जन्म देती है। जहॉ प्राचीन काल में मनुष्य धर्म को केंद्र बिन्दु मानकर के अपना जीवन जीता था वहीं आधुनिक समय में धर्म की अपेक्षा संस्कृति का महत्व अधिक हुआ है। किसी भी समाज की कला व परंपरा का अन्वेषण करके उस समाज की आत्मा स्वरूप संस्कृति का दिग्दर्शन किया जा सकता है। परंपराओं को सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग भी कहा जा सकता है। परंपरागत कलाऐं भारतीय समाज की जीवंत साक्षात्कार हैं। इन्हीं के फलस्वरुप समाज के भावनात्मक अनुभव को अभिव्यक्ति पूर्ण रूप से हो पाती है। भारतीय परंपरा में विविधता पाई जाती है। जो इस समाज की अद्वितीयता को प्रमुख रूप से प्रकट करती है। कला को संस्कृति के माध्यम से ही व्यक्ति अपने विचार अभिप्राय व धार्मिक आदर्श को साझा करते हैं। भारतीय परंपरागत कलाऐं वर्तमान में एक वृहद रूप में जनमानस द्वारा अपनाई गई हैं। आधुनिक समय में जहॉ प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे हैं वहीं कला जगत भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा है। आधुनिक समय के अनुरूप लोगों का ध्यान परंपरागत कलाकृतियों व शिल्प की ओर गया है। जो समाज को आधुनिक युग में अपने प्राचीन मूलक कला संस्कृति व सभ्यता से जोड़े रखने में अहम भूमिका का निर्माण करता है।

प्राचीन परंपरागत कला– प्राचीन भारतीय कला परंपरा का इतिहास भारतीय सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। भारतीय पारंपरिक कला का एक वृहद क्षेत्र है। इसके अंतर्गत स्थापत्य, शिल्प कला, नृत्य कला, चित्र व आदि कलाऐं आती हैं। प्राचीन परंपरागत कला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हड़प्पा, मोहनजोदड़ो से प्राप्त होते हैं। परंपरागत कलाऐं आदिवासियों द्वारा शुरू की गई कलाऐं होती हैं। इन लोगों द्वारा प्रारंभ की गई पारंपरिक कलाओं में विविध रंग, आकर व उनकी आंतरिक अभिव्यक्ति तथा उनके द्वारा किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठान प्रदर्शित होते हैं। प्राचीन पारंपरिक कलाओं का जन्म उपयोगितावादी दृष्टिकोण के आधार पर हुआ था। जो धीरे–धीरे एक परंपरा के रूप में परिवर्तित होती चली गई। हमारी प्राचीन परंपरागत कलाऐं समाज, संस्कृति व ऐतिहासिक विरासत को पहचाने व समझने की एक मुख्य साधन बन गई हैं।

परंपरागत रूप से कार्य करने वाले कलाकार जो दूर ग्रामीण क्षेत्रों में रहकर कार्य किया करते थे। यह कलाकार बिना किसी विद्यालय से औपचारिक शिक्षा ग्रहण किए बिना कार्य करते हैं। उनके पास देश या स्थानीय परंपरागत कला ज्ञान का भंडार होता है और जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है। इन कलाओं का लोक कला परंपरागत कला, जनसाधारण कला, शिल्प कला और इसी प्रकार कई और अन्य नामें से जाना जाता है। यदि परंपरागत कला के आरंभिक इतिहास को देखें तो यह सिंधु घाटी सभ्यता में उपयोगिता वादी दृष्टिकोण से जिन बर्तनें मूर्तियों का निर्माण कलाकारों ने किया आगे चलकर मानव ने इस कला का अनुसरण किया व समय बीतने के फलस्वरुप यही कला परंपरा में परिवर्तित हो गई। प्रागैतिहासिक काल में मानव ने कुछ आड़ी तिरछी रेखाओं द्वारा चित्रों का निर्माण करना सीखा व यहीं से कला के विकास का क्रम आरंभ होता है। इसके पश्चात सिंधु घाटी सभ्यता के लोग बर्तनों पर मानव आकृतियॉ (मातृदेवी की मूर्तियॉ) वनस्पति, पशु पक्षी तथा ज्यामिति अभिप्राय से जिन पर गोल अर्धचंन्द्राकार व आडी–तिरछी रेखाओं से आलेखनों का प्रयोग है।1 इसी कला का अनुसरण आगे चलकर हुआ तथा यही एक लोक परंपरा के रूप में परिवर्तित हो गई।

चित्रकला परंपरा– चित्रकला व लोक कला परंपरा का उदय आदिवासी जनजातियों द्वारा हुआ था वर्तमान में प्रत्येक राज्यों व क्षेत्र विशेष की अपनी पृथक–पृथक लोक कलाऐं हैं। लोक कलाऐं लोक संस्कृति का ही एक महत्वपूर्ण अंग मानी जाती हैं। ये कलाऐं समाज, संस्कृति व विरासत को व्यक्त करती हैं। इन कलाओं से सामुदायिक जीवन की विचारधारा प्रकट होती है। परंपरागत तौर पर लोक कला क्षेत्र अथवा समुदाय विशेष के लोगों द्वारा किया गया कलाकर्म है जिसके मूल में शुभ का विचार होता है।2 लोक कला परंपरा को जीवित रखने वाले लोग अपने प्रत्येक शुभ कार्यों में जैसे दिवाली, शादी विवाह व नामकरण जैसे अवसरों पर इसका अंकन अपने घरों में करते हैं। भारतीय लोक कला परंपरा क्षेत्र व राज्य के आधार पर पृथक–पृथक है। जैसे मधुबनी कला जो मिथिला कला

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

के नाम से भी प्रसिद्ध है यह नेपाल के राजा जनक रामायण में सीता के पिता के राज्य में उत्पन्न हुई थी।3 वर्तमान में बिहार की मधुबनी लोक कला अत्यधिक प्रसिद्ध है। वस्तुतः राजस्थान की 'फड' लोक कला जिसमें धार्मिक अंकन अत्यधिक होता है यह कपड़े वह कैनवास में उकेरी जाती है। वर्ली पेंटिंग, कालीघाट पेंटिंग, गोंड, ऐपण, कलमकारी आदि ऐसी ही कलाऐं हैं जिनमें लोग परंपराओं, धर्म व शुभ प्रतीकों का अंकन किया जाता है। लोक कला परंपरा में वर्तमान समय में आधुनिक कलाकारों द्वारा नवीनता का समावेश किया जा रहा है। जिसमें अनेक नवीन प्रयोग भी किया जा रहे हैं।

मूर्ति कला व शिल्प कला परंपरा– प्रारम्भ में मूर्ति कला में परंपरागत तौर–तरीको से बनाई जाती थी जैसे मिट्टी की मूर्तियॉं (मृण मूर्तियॉं) व पत्थर से निर्मित मूर्तियॉं कई स्थानों में काष्ठ का भी प्रयोग मूर्तियों के निर्माण हेतु किया जाता था। मिट्टी से बनी मूर्तियों को समान्यतः टेराकोटा के नाम से जाना जाता है। भारत में प्रत्येक मंदिर में पत्थर की कामुक मूर्तियॉं बनी होती हैं। हिंदू सिद्धांतों में से एक में यह भी कहा गया है कि मुख्य मंदिरों के बाहर की दीवारों पर कामुक मूर्तियां भक्त की परीक्षा लेने के लिए होती हैं कि उसने मंदिर में प्रवेश करने से पहले अपने दिमाग को सभी कामुक और सांसारिक विचारों से मुक्त कर लिया है या नहीं।4 कलाकारों द्वारा कई छोटे व बड़े आकार की मूर्तियों का निर्माण वर्तमान में किया जा रहा है। मिट्टी से बनी मूर्तियों को आग में पकाकर उनकों स्थाई स्थायित्व प्रदान किया जाता है। जिससे कि वह लंबे समय तक सुरक्षित रह सकें। मृण मूर्तियों को हाथों के कुम्हार व कलाकारों द्वारा निर्मित किया जाता है। तत्पश्चात उनमें रंग– रोगन आदि का कार्य किया जाता है। इन मूर्तियों के विषय अधिकांश देवी–देवताओं से संबंधित होते थे। वर्तमान में फाइबर, सीमेंट आदि माध्यमों द्वारा मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है। व आधुनिक कलाकारों के विषय और दृष्टिकोण भी अतीत की तुलना में परिवर्तित हुए हैं।

शिल्प कला का इतिहास भी अत्यधिक प्राचीन है। प्रागैतिहासिक काल में मानव अपनी सुरक्षा हेतु पत्थरों के औजारों का निर्माण किया करता था वहीं से शिल्प कला का आरंभ माना जा सकता है। प्राचीन काल में शिल्प कला उपयोगितावादी दृष्टिकोण के आधार पर विकसित हुई थी। उसे समय से परंपरागत रूप से चली आ रही शिल्प कला में परिवर्तित हुए व इसका क्षेत्र भी विस्तृत होते चला गया। मानव ने अनुसरण करके शिल्प कला के स्वरूप को सुधार तथा इसे और अधिक उपयोगी बनाया। वर्तमान परिपेक्ष के अनुरूप यदि शिल्प कला का विश्लेषण किया जाए तो काष्ठ, पत्थर, धातु आदि माध्यमों से शिल्प कला का विकसित स्वरूप हमारे समक्ष उभर कर आया है। आज शिल्पकार काष्ठ व धातु से कई सौंदर्य मूलक वस्तुओं का निर्माण कर रहे हैं। वर्तमान में आधुनिकता के आने के फलस्वरुप जहॉं एक और टेक्नोलॉजी का प्रयोग हो रहा है वहीं हस्त निर्मित शिल्प व परंपरागत वस्तुओं का भी एक व्यापक बाजार उभर कर आया है। आधुनिक व शिक्षित समाज परंपरागत रूप से बने इन वस्तुओं के महत्व को बखूबी समझ रहा है।

कला व संस्कृति–भारतीय संस्कृति विविधताओं व परंपराओं का समावेश है। वर्तमान में भारतीय कला व संस्कृति व कला आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रही है। आधुनिकता में विज्ञान तकनीक, शिक्षा, व्यापार, साहित्य आदि को लिया जा सकता है। जो कि इन क्षेत्रों में प्रतिदिन उन्नति होती जा रही है। भारतीय संस्कृति में वैदिक संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। भारतीय समाज के सोलह संस्कार जिनका सम्बन्ध जन्म से मृत्यु तक का है उन संस्कारों का स्रोत हम वैदिक साहित्य में पाते हैं।5 मनुष्य के रोजमर्रा के जीवन में प्रातः उठने से लेकर रात्रि में सोने तक के समय में पूरी दैनिक दिनचर्या को प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति के अनुरूप ही करता है। संस्कृति का तात्पर्य केवल हमारे द्वारा पहने जाने वाले कपड़े, खान–पान, शिक्षा व रहन–सहन से नहीं है। इसके विपरीत हम यह भी कह सकते कि इन चीजों का कड़ाई से पालन करने को ही हम संस्कृति कहेंगे। संस्कृति वास्तविक रूप में विचारों व आदर्शो पर टिकी होती है। संस्कृति व सभ्यताऐं हमें निरंतर ऊंचाई की ओर अग्रसर करती हैं। कलाओं द्वारा संस्कृति का प्रदर्शन होता है। प्रत्येक क्षेत्र विशेष की संस्कृति के अनुरूप वहॉं की कलाऐं होती हैं जो उनके लोक–कलाओं व रहन–सहन, आचरण, विचार–वस्तु आदि से जानी जा सकती है। वर्तमान में कला व संस्कृति के मायने बदल चुके हैं। कला में आधुनिकता का समावेश हो चुका है। कलाकार नए विषयों व पाश्चात्य कलाकारों का अनुसरण कर रहे हैं। भारतीय परिवेस धर्म अनुशासित है। प्रत्येक व्यक्ति धर्म का अनुसरण करता है। तथा उसके जीवन में धर्म का प्रभाव कहीं ना कहीं प्रदर्शित होता है। भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता यह है कि वह पुरुषार्थ चतुष्ट्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को ही मानवीय जीवन मूल्यों का आधार मानती है।6 कला में धार्मिकता का स्थान अत्यधिक उत्कृष्ट है। अजंता, एलोरा, बदामी, जोगीमारा आदि स्थानों में धार्मिक चित्रों की प्रधानता देखने को मिलती है। इन स्थानों की चित्रकला में बौद्ध, हिंदू, जैन आदि धर्म से संबंधित चित्र प्राप्त होते हैं। 18वीं शताब्दी के प्रख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा उन्होंने भारतीय धार्मिक विषयों पर चित्रण किया हिंदू धर्म व धर्म ग्रंथो पर उनके कलाकृतियों का वृहद संग्रह है। भारतीय कलाकारों में जामिनी राय का नाम भी प्रसिद्ध कलाकारों की श्रेणी में लिया जाता है। उनके चित्रों के विषय भी धार्मिक हैं। भारतीय कलाकारों ने अपने चित्रों के माध्यम से धर्म को प्रदर्शित करने की पुरजोर कोशिश की है।

वर्तमान समय में आधुनिकता के फलस्वरूप कलाकारों ने चाहे वह शिल्प से संबंधित हो मूर्ति या चित्र हो कलाकार आधुनिक चीजों का समावेश अपनी कला में करने लगे हैं। आधुनिक शिल्पी व कलाकार आधुनिक विषय जैसे– समाज में पहले समस्याऐं, गरीबी, राजनैतिक कुरितियों को अपने कैनवास पर उकेरकर समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान कलाकार अतीत की परंपराओं का अंकन न करके वर्तमान समाज में घटित हो रही घटनाओं को अपने चित्रण का विषय चुनते हैं। हस्तशिल्पी, मूर्ति शिल्पी, सभी कलाकार वर्तमान समय के अनुरूप अपने हस्तशिल्प का परिवर्तित स्वरूप हमारे समक्ष रख रहे हैं। हस्तशिल्प जहॉं एक और उपयोगी कला है वहीं इसमें परिवर्तन करके वर्तमान समाज की मॉंग के अनुसार इस कला का उचित प्रयोग आमजन अपनी आवश्यकता अनुसार कर सकते हैं। वर्तमान आधुनिक कलाकार संस्कृति व तकनीक परिवर्तनों से प्रभावित होते हैं। वह इसी का प्रभाव उनकी कृतियों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। इनके द्वारा रचित कृतियॉं समाज को एक दर्पण दिखाती हुई प्रतीत होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉक्टर रिता प्रताप, भारतीय मूर्तिकला व चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ संख्या 27
2. https://hi.wikipedia.org/wiki ध्लोककला
3. Pipbhrat.com/manoranjan/art
4. https://www.linkedin.com/pulse/shilp-kala-art-carving-sculptures-rahul-ithape
5. hi.quora.com/ gekjh laLd`fr
6. डॉक्टर शेर सिंह बिष्ट, मध्य भारतीय समाज संस्कृति व पर्यावरण, पृष्ठ संख्या – 165–166

*****